अथ रुधादयः

रुधिर आवरणे 1

व्याख्याः रुधिर –(रोकना)–अनिट् इर् इत्संज्ञक है। लुङ् में च्लि को विकल्प से चङ् होना इरित् होने का फल है। उतदिर् तक ६ धातुएँ इरित् और उभयपदी हैं।

रुधादिभ्यः श्नम् 3.1.78

शपोवादः। रुणाद्धि। श्नसोरल्लोपः -रुन्धन्ति। रुणत्सि, रुन्धः, रुन्ध। रुणध्मि, रुन्ध्वः,रुन्ध्मः। रुन्धे, रुन्धाते,रुन्धते। रुरोध, रुरुधे। रोद्धा। रोतस्यति रोत्स्यते।

रुणद्धु-रुन्धात्।

रुन्धाम, रुन्धन्तु। रुन्धि। रुणधानि, रुणधाव, रुणधाम। रुन्धाम्, रुन्धाताम्, रुन्धताम्। रुन्त्स्व। रुणधै, रुणधावहै, रुणधामहै।अरुणत् अरुणद्, अरुन्धाम्, अरुन्धान्। अरुणत्, अरुणः। अरुन्ध। अरुन्धताम्, अरुन्धत। अरुन्धाः। रुन्ध्यात्। रुन्धीत। रुध्यात् रुत्सीष्ट। अरुधत, अरौत्सीत, अरुद्ध, अरुत्साताम्, अरुत्सत। अरोत्स्यत, अरोत्स्यत।

व्याख्याः रुधादि धातुओं से परे श्नम् होता है।

श्नम् के शकार और मकार की इत्संज्ञा होकर लोप हो जाता है, केवल 'न' बचा रहता है।

शप–इति यह श्नम्, प्रत्यय शप् का अपवाद है।

रुणाद्धि–एकवचन 'रुध्+ति' इस स्थिति में श्नम् हुआ। वह रकारोत्तरवर्ती उकार के आगे मित् होने के कारण हुआ। तब 'झषस्तथोर्धोध'' सूत्र से तकार को धकार तथा धातु के धकार को जश् दकार हुआ और नकार को णकार होकर रूप सिद्ध हुआ।

श्नसोःइति–श्नः के अकार का हलादि ङित् सार्वधातुक परे रहते 'श्नसोरल्लोपः' सूत्र से लोप होता है। 'रुन्धः' में हलादि ङित् होने से उक्त अकार का लोप होता है।

रुन्धः–लट् प्रथमपुरुष द्विवचन में श्नम् होने पर 'रुन्ध+तस्' इस दशा में अपित् सार्वधातुक होने से तस् के ङित् होने के कारण उसके परे रहते 'श्नसोरल्लोपः' सूत्र से अकार का लोप हुआ। तस् के तकार को झषस्तथोर्धाधः सूत्र से धकार हुआ। 'झरो झरि सवर्णे' सूत्र से पूर्व धकार का विकल्प से लोप होने पर रूप बनता है। तब णत्व के असिद्ध होने से नकार के स्थान में 'नश्चापदान्तस्य झलि' इस सूत्र से नकार को अनुस्वार और उसे 'अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः' इस सूत्र से परसवर्ण नकार होता है। परसवर्ण के असिद्ध होने से पुनः णत्व नहीं होता। लोप के अभावपक्ष में पूर्व धकार को जश् दकार होकर रुन्द्धः रूप होता है।

रुन्धन्ति–लट् प्रथम पुरुष के बहुवचन में 'झि' के झकार को 'अन्त' आदेश होने पर श्नम् के अकार का लोप, अनुस्वार, परसवर्ण आदि कार्य होकर रूप सिद्ध हुआ।

रुणात्सि–लट् के मध्यमपुरुष के एकवचन में श्नम् होने पर धकार को चर् तकार होने पर रूप बना।

रुन्धः, रुन्ध–मध्यमपुरुष के द्विववचन थस् में प्रथमपुरुष के द्विवचन के समान ही रूपसिद्धि होती है। यहाँ थकार का 'झषस्तथोर्घोघः' से धकार आदेश होता है।

रुन्धे, रु ध ते, रुन्धते–लट् आत्मनेपद प्रथम पुरुष के ये रूप हैं। आत्मनेपद के सभी प्रत्यय अपित् हैं, इसलिये ङिद्वत् हो जाने के कारण श्नम् के अकार का लोप हो गया है।

शेष रूप –रुन्त्से, रुन्धाथे, रुन्ध्वे। रुन्धे, रुन्ध्वहे, रुन्ध्महे।

लिट् –रुरोध, रुरुधतुः, रुरुधुः। रुरोधिथ, रुरुधथुः रुरुध। रुरोध, रुरुधिव, रुरुधिम। आ० पद–रुरुधे, रुरुधाते, रुरुधिरे।रुरुधिषे, रुरुधाथे, रुधिध्वे, रुरुधे, रुरुधिवहे, रुरुधिमहे।

तास् में नित्य अनिट् होते हुए भी यह धातु न अजन्त है और न अकारवान्। इसलिये थल में भी यहाँ क्रादि नियम से नित्य इट् होताहै।

रोद्धा–लुट्, के प्रथमपुरुष एकवचन में 'रुध+ ता' इस दशा में 'झपस्तथोर्धोधः' सूत्र से तकार को और धातु के धकार को जश् दकार और उकार को लघूपधगुण होकर रूप सिद्ध हुआ।

रुन्धि –लोट के मध्यमपुरुष एकवचन में 'हुझल्यो हेर्धिः' से 'हि' को 'धि' हुआ। शेष कार्य 'रुन्धः' के समान ही होते हैं।

रुणधानि–लोट् उत्तमपुरुष एकवचन में 'आडुत्तमस्य पिच्च' इस सूत्र से आट् आगम और वह पित् होता है। इसलिये श्नम् के अकार का लोप नहीं होता।

इसी प्रकार रुणधाव, रुणधाम भी सिद्ध होते हैं।

रुन्धाम्–लोट् आत्मनेपद प्रथमपुरुष एकवचन में प्रत्यय की टि को आम्, श्नम् के अकार का लोप, तकार को धकार, पूर्व धकार का 'झरो झरि सवर्णे' सूत्र से वैकल्पिक लोप। नकार को अनुस्वार और परसवर्ण होने पर रूप सिद्ध हुआ।

रुन्त्स्व–लोट् आ० प० मध्यमपुरुष एकवचन में श्नम् के अकार का लोप ओर धकार को चर् होकर रूप बना।

रुणधै–लोट् आत्मनेपद उत्तमपुरुष एकवचन में आट् के पित् होने से श्नम् के अकार का लोप नहीं हुआ। और प्रत्यय इट् के इकार को पहले एकार फिर ऐकार आदेश, तथा आट् के आकार और ऐकार को वद्धि एकादेश होने पर रूप सिद्ध हुआ।

इसी प्रकार–रुणधावहै रुणधामहै–रूप सिद्ध होते हैं।

अरुणः –लङ्पर प, मध्यमपुरुष एकवचन में सिप् के लोप होने पर झकार को जश दकार और उसे चर् तकार विकल्प से हुआ। दकारपक्ष में 'दश्च' सूत्र से दकार को रु होकर विसर्ग हुआ।

रुत्सीष्ट –आ लिङ् प्रथमपुरुष एकवचन में 'लिङ्सिचावात्मनेपदेषु' सूत्र से 'सीयुट्' के कित् होने से गुण नहीं हुआ।

अरुधत्–लुङ् परस्मैपद में इरित् होने के कारण च्लि को 'इरितो वा' से विकल्प से अङ् हुआ।

अरौत्सीत्–लुङ् परस्मैपद में अङ् अभाव पक्ष में सिच् लगकर रूप बना।

अरुद्ध– लुङ् आत्मनेपद प्रथमपुरुष एकवचन में 'झलो झलि' से सिच् का लोप, तकार को धकार और धातु के धकार को जश् दकार होकर रूप सिद्ध हुआ।

भिदिर बिदारणे 2

व्याख्याः २ भिदिर् (तोड़ना)–अनिट्। इरित्।

लट्–भिनत्ति, भिन्ते। लिट्–बिभेद, बिभिदे। लुङ्–भेत्ता। लृङ्–भेत्स्यति। भेत्स्यते। लोट्–भिनत्तु, भिन्ताम्। लङ्–अभिनत, अभिन्त।वि० लि–भिन्देत, –भिन्दीत। आ० लि०– भिद्याात्, भित्सीष्ट। लुङ्–अभिदत्, अभैससीत, अभित्त। लङ्–अभेत्सयत्, अभेत्स्यत।

छिदिर द्वैधीकरणे 3

व्याख्याः ३ छिदि (काटना)–अनिट्। उभयदी।

लट्–छिनत्ति, छिन्ते। लिट्–च्छिेद, चिच्छिदे। लुट्–छेत्ता। लृट्–छेत्स्यति, छेत्स्यते। लोट्–छिनत्तु, छिन्ताम्। लङ्–अच्छिनत्, अच्छिन्त। वि० लि०–छिन्देत्, छिन्दीत। आ० लि०–छिद्यात्, छित्सीष्ट। लुङ्–अच्छिदत्, अछैत्सीत्, अछित्त। लृङ्–अच्छेत्स्यत्, अच्छेत्स्यत।

उपसर्ग के योग में–

परिच्छिनत्ति–नापता है। उच्छिनत्ति –नाशकरता है।

युजिर् योगे 4

व्याख्या: ४ युजिन (मिला)––अनिट्। इरित्। उभयपदी।

लट्–युनक्ति, युङ्क्ते। लिट्–युयोज, युयुजे। लुट्–योक्ता। लृट्–योक्ष्यति, योक्ष्यते। लोट्–युनक्तु, युङ्क्ताम् लङ्–अयुनक्, अयुङ्क्त। वि० लि०–युजेत्, युजीत। आ० लि०–युज्यात्, युक्षीष्ट। लुङ्–अयुजत्, अयौक्षीत्, अयुक्त। लृङ्–अयोक्ष्यत्, अयोयत।

उपसर्ग के योग में–

प्रयुङ्क्ते –प्रयोग करता है।अनुयुङ्क्ते–प्रश्न करता है।

नियुनक्ति–नियुक्त करता है।उद्युङ्क्ते–उद्योग करता है।

उपयुङ्क्ते–उपयोग करता हे। वियुनक्ति –अलग होता है।

रिचिर् बिरेचने 5

रिणक्ति, रिङ्क्ते। रिरेच। रेक्ता। रेक्ष्यति।। अरिणक्। अरिचत्, अरेक्षीत्, अरिक्त।

व्याख्या: रिचिर् (खाली होना)–अनिट्। इरित् उभयपदी।

रिणक्ति–लट् प्रथम पुरुष एकवचन में विकरण श्नम् होने पर चकार को कुत्व ककार और नकार को णकार होकर रूप सिद्ध हुआ।

रिङ्क्ते–लट् प्रथम पुरुष एकवचन में 'रिच् ते' इस स्थिति में श्नम् 'श्नसोरल्लोपः' इस से श्नम् के अकार का लोप, नकार को अनुस्वार परसवर्ण चकार को कुत्व ककार होकर रूप सिद्ध हुआ।

रिरेच–लिट् के प्रथम पुरुष के एकवचन णल् में द्वित्व, अभ्यासकार्य अभ्यास के उत्तरखण्ड में इकार को गुण होकर बना।

रेक्ता–लट् प्रथमपुरुष एकवचन में गुण एकार ओर चकार को कुत्व ककार होकर रूप बना।

रेक्ष्यति–लृट् के प्रथमपुरुष एकवचन में 'रिच्+स्यति' इस स्थिति में इकार का लघूपध गुण और चकार को कुत्वककार होने पर सकार को मूर्धन्य षकार तथा क ष संयोग से क्षकार होकर रूप बना।

शेष रूप–अरिङ्चम्, रिचन्। अरिणक्, अरिङ्क्तम्, अरिङ्क्त। अरिणचम्, अरिचम।

अरिचत्, अरैक्षीत्–लुङ् प्रथमपुरुष एकवचन में अट्, तिप्, च्लि, को इरित्त्वात् अङ् विकल्प से हुआ तो 'अरिचत्' रूप बना। जब अङ् नहीं हुआ तब च्लि को सिच्, इकार को हलन्तलक्षणा वद्धि, चकार को कुत्व ककार, सकार को मूध्रन्य षकार तथा क ष के संयोग से क्ष होने पर रूप सिद्ध हुआ।

अरिक्त–लुङ् आत्मनेपद प्रथमपुरुष एकवचन में 'झला झलि' से सिच का लोप होने पर चकार को कुत्व ककार होकर रूप सिद्ध हुआ।

उपसर्ग के योग मे।–

अतिरिणक्ति–बढ़ता है।

विचिर् पथग्भावे 6

विनक्ति, विङ्क्ते।

व्याख्या: विचिर् (अलग होना)–अनिट्। इरित्। उभयपदी। इसके रूप रिचिर् के समान बनते हैं।

उपसर्ग के योग से–

विविनक्ति–विवेक करता है।

क्षुदिर सम्पेषणे 7

क्षुणत्ति, क्षुन्ते। क्षुत्ता। अक्षुदत, अक्षौत्सीत्, अक्षुत्त।

व्याख्या: – क्षुदिर (मसल डालना)–अनिट्। इरित्। उभयपदी।

उच्छदिर् दीप्तिवनयोः 8

छणत्ति, छन्ते। चच्छर्द। सेसिचीति वेट्–चच्छदिषे चच्छत्से। छर्दिता। छर्दिष्यति, छर्त्सति। अच्छदत्, अच्छर्दीत। अच्छर्दिष्ट।

व्याख्या: उच्छदिर् (चमकना, जुआ खेलना)–सेट्। इरित्, उदित्। उभयपदी।

चच्छदिषे, चच्छत्से–लिट् आत्मनेपद मध्यमपुरुष एकवचन में द्वित्व, अभ्यासकार्य होने पर 'सेसिचि कृतचतछदतदनतः' सूत्र से इट विकल्प से हुआ। जब इट् हुआ तब सकार को षकार हुआ और जब इट् नहीं हुआ तब दकार को चर् तकार हुआ।

छर्दिष्यति, छत्स्र्यति–लृट् प्रथमपुरुष एकवचन में पूर्व इट् विकल्प होने के कारण दो रूप बने।

अच्छदत्, अच्छर्दीत्–लुङ् परस्मैपद प्रथमपुरुष एकवचन में च्लि को जब अङ् हुआ तब 'अच्छदत्' रूप बना। अङ् के अभावपक्ष में सिच् हुआ तथा ईट्, सिच् का लोप होकर गुण होने पर 'अच्छर्दीत' रूप सिद्ध हुआ।

उतदिर हिंसानादरयोः 9

तणत्ति। तन्ते।

व्याख्या: उतदिर (हिंसा और अनादर करना)–सेट्। उभयपदी।

तन्ते–लट् आत्मनेपद प्रथमपुरुषएकवन में श्रम, श्रम् के अकार का लोप, दकार को चर् तकार और उसका 'झरो झरि सवर्णे', से वैकल्पिक लोप होने पर रूप सिद्ध हुआ।

लिट्–ततर्द, ततर्दे लुट्–तर्दिता। लृट्–तर्दिष्यति, तर्दिष्यते। लोट्–तणत्तु, तन्ताम्। लङ्–अतणत्, अतन्त। वि०–लि०–तन्देत, तन्देत। आ० लि० –त ति, र्दिर्दिषीष्ट। लुङ–अतदत्, अतर्दीत्, अतर्दिष्ट। लृङ–अतर्दिष्यत्, अतर्दिष्यत।

कृती वेष्टने 10

कृणत्ति।

व्याख्या: कृती (घेरना)–सेट्। ईदित्। परस्मैपदी।

तह हिसि हिंसायाम् 11.12

व्याख्या: तह, हिसि (हिंसा करना)–सेट्। परस्मैपदी।

तणह इम् 7.3.92

तहः श्नमि कृते 'इम' आगमो हलादौ पिति। तणेढि, तण्ढः। ततर्ह। तर्हिता। अतणेट्।

व्याख्या: तणह इति–तह धातु को श्नम् करने पर 'इम्' आगम होता है हलादि पित् प्रत्यय परे होने पर।

तणेढि–लट् प्रथमपुरुष एकवचन में श्नम् करने पर 'तन ह ति' इस स्थिति में 'तणह् इम्' सूत्र से इम् आगम हुआ। मित् होने से वह अन्त्य अच् नकारोत्तरवर्ती अकार के आगे हुआ। तब अकार और उस इकार को गुण एकार हुआ। 'तनेह् ति' इस दशा में हकार को ढकार और तकार को 'झषस्तथोर्धोधः' से धकार तथा उसे ष्टुत्व ढकार होने पर 'ढो ढे लोपः– से पहले ढकार का लोप तथा नकार को णकार होकर रूप सिद्ध हुआ।

तण्ढः– लट् प्रथमपुरुष द्विवचन में 'तनह तस्' इस दशा में श्नम् के अकार का 'श्नसोरल्लोपः' से लोप, हकार को ढकार, तकार को धकार, पहले ढकार का लोप तथा नकार को णकार होकर रूप बन गया।

लट्–तणेढि, तण्ढः, तंहन्ति। तणेक्षि, तण्ढः, तण्ढ। तणेह्मि, तंह्व, तंह्मः।

अतणेट्–लङ् प्रथमपुरुष एकवचन में श्रम् करने पर इम् आगम, हल्ङ्यादि लोप, ढत्व, जश्त्व और चर्त्व होने पर रूप बना।

शेष रूप–अतण्ढाम्, अतंहन्। अतणेट्, अतण्ढम्, अतण्ढ। अतणहम्, अतंह्व, अतंह्म।

श्नात् नलोपः 6.4.23

श्नमः परस्य नस्य लोपः स्यात्। हिनस्ति। हिंसिता।

व्याख्याः श्नात् नेति–श्नम् से परे नकार का लोप हो।

हिनस्ति–इदित् होने से हिस् धातु को नुम् आगम हुआ। तब लट् के प्रथमपुरुष के एकवचन में श्नम् होने पर 'हिन न् स् ति' इस स्थिति में श्नम से पर नकार का लोपहोने पर रूप सिद्ध हुआ।

शेष रूप–हिंस्तः, हिंसन्ति। हिनस्सि, हिंस्थः, हिंथ। हिनस्मि, हिंस्वः, हिंस्मः।

लिट्–जिहिंस, जिहिंसतुः, जिहिंसुः। लुट्–हिंसिता। ऌट्–हिंसिष्यति। लोट्–हिनस्तु।

तिप्यनस्तेः 8.2.73

पदान्तस्य सस्य दः स्यात्तिपि न त्वस्तेः। 'ससजुषोरुः' इत्यस्यापवादः। अहिनत-अहिनद्, अस्तिाम्, अहिंसन्।

व्याख्याः तिप्यनस्तेरिति–पदानत सकार को दकार हो तिप् परे रहते परन्तु अस् के सकार को नहीं होता।

ससजुषोरिति– यह सकार की दकार करना 'ससजुषोः रुः' का अपवाद है।

अहिनत्, अहिनद्–लङ् प्रथमपुरुष के एकवचन में श्नम् होने पर सकार को जब रुत्व प्राप्त हुआ। उसको बाधकर 'तिप्यनस्तेः' इस सूत्र से सकार को दकार हुआ। उसकी चर् तकार विकल्प से हुआ और इसलिये दो रूप बने। तिप् के अपक्त तकार का हल्ङ्यादि लोप हो जाता है।

अहिंस्ताम्–लङ् प्रथमपुरुष द्विवचन में श्नम, उसके अकार का लोप होने पर रूप बना।

सिपि धातो रुर्वा 8.2.74

पदान्तस्य धातोः सस्य रुः स्याद् वा। पक्षे 'झलां जशोन्ते' इति जश्त्वम्-अहिनः, अहिनत्, अहिनद्।

व्याख्याः सिपि धातोरिति–पदान्त धातु के सकार को रु हो विकल्प से।

अहिनः लङ् मध्यमपुरुष एकवन में सिप् का हल्ङ् यादि लोप होने पर सकार को 'सिपि घातोः' से रु और उसे विसर्ग होकर रूप सिद्ध हुआ।

रू के अभावपक्ष में सकार को 'झलां जशोन्ते' से जश् दकार हुआ तब चर् तकार विकल्प से हुआ। इस प्रकार रूप बना।

शेष रूप–अहिंसन्। अहिनत्–द् अहिंस्तम्, अहिंस्त। अहिनसम्, अहिंस्व, अहिंस्म।

वि० लि०–हिंस्यात्। आ० लि०–हिंस्यात्। लुङ्–अहिंसीत्। ऌङ्–अहिंसिष्यत्।

उन्दी क्लेदने 13

उदनत्ति, उन्तः, उन्दन्ति। उन्दाचकार। औनत्, औन्ताम्, औन्दन्। औनः औनत्। औनदम्

व्याख्याः उन्दी (गीला करना)–सेट्। इदित्। परस्मैपद।

उनत्ति–लट् प्रथमपुरुष एकवचन में श्नम् होने पर 'उ नन्दी ति' इस स्थिति में 'श्नान्नलोपः' सूत्र से नकार का लोप होने पर रूप बना।

उन्तः–लट् प्रथमपुरुष के द्विवचन में रम् होने पर 'झरो झरि सवर्णे' से दकार का विकल्प से लोप होने पर दो रूप बनते हैं।

उन्दांचकार–लिट् में इजादि गुरुमान् होने से आम् होता है और तब 'कृ' आदि का अनुप्रयोग होकर रूप बनते हैं।

लुट्–उन्दिता। लृट्–उन्दिष्यति।

औनत्–लङ् प्रथमपुरुष एकवचन में आट्, वद्धि, श्नम्, से पर नकार का लोप, तिप् का हल्ङ्यादि लोप और दकार को चर् तकार होकर रूप सिद्ध हुआ।

औन्ताम्–लङ् प्र. पु. द्वि. में श्नम् से पर नकार का लोप, श्नम् के अकार का लोप और दकार का सवर्ण पर झर् लोप होने पर दो रूप बनते हैं। एक में तकार द्वित्व रहेगा और दूसरे में एक।

औनः, औनत्–लङ् सिप् में सिप् का हल्ङ्यादि लोप होने पर दकार को 'दश्च' सूत्र से रु विकल्प होने पर दो रूप बनते हैं।

विधिलिङ्–उन्द्यात्। आ. लि.–उद्यात्। लुङ्–ओन्दीत्। लृङ्–औन्दिष्यत्।

अजू व्यक्ति-म्रक्षण-कान्ति-गातिषु 14

अनक्ति, अङ्क्त, अजन्ति। आनज। आनजिथ, आनङ्क्थ। अजिता, अङ्क्ता। अङ्ग्धि। अनजानि। आनक्।

व्याख्याः अज–(स्पष्ट होना, साफ होना, इच्छा और जाना)–ऊदित् होने से यह धातु वेट् है।

अनक्ति–लट् प्रथमपुरुष द्विवचन में श्नम्, नकार का लोप, श्नम् के अकार का लोप होने पर 'अन्ज+ तस्' इस दशा में जकार का कुत्व गकारऔर उसे चर् ककार हुआ। तब नकार को 'नश्चापदान्तस्य झलि' से अनुस्वार और उसे अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः' सूत्र से परसवर्ण ङकार होकर रूप बना।

अजन्ति–लट् प्रथमपुरुष एकवचन में श्रम्, नकार का लोप, नकार को अनुस्वार परसवर्ण से अकार होने पर रूप सिद्ध हुआ।

आनंज–लिट् प्रथमपुरुष बहुवचन में द्वित्व, अभ्यासकार्य होने पर 'आ अज् अ' इस दशा में 'तस्मान्नुड् हिलः' सूत्र से नुड् आगम होने से रूप सिद्ध हुआ।

आनजिथ, आनङ्क्थ–लिट् मध्यमपुरुष एकवचन थल् में द्वित्व, अभ्यासकार्य हुआ। ऊदित् होने से थल को 'स्वरतिसूतिसूयतिधूञूदितो वा' सूत्र से विकल्प से इट हुआ। इट् पक्ष् में पहला रूप बना। इट के अभाव में जकार की कुत्व गकार, चर्त्व से ककार ओर नकार को अनुस्वार पस्सवर्ण से ङकार होकर दूसरा रूप सिद्ध हुआ।

अजिता, अङ्क्ता–लुट् प्रथमपुरुष एकवचन में ऊदित्वात् इट् विकल्प से होकर दो रूप बनते हैं। इट् के अभाव में जकार को कुत्व गकार, चर्त्व से ककार और नकार को अनुस्वार परसवर्ण से ङकार होकर दूसरा रूप बना।

लृट् में –अजिष्यति, अङक्ष्यति। लोट्–अनक्त, अङ्क्ताम्, अजन्तु।

अङ्ग्धि–लोट् मध्यमपुरुष एकवचन हि में 'हुझलभ्यो हेर्धिः' सूत्र से हि को धि आदेश हुआ हि के अपित् होने से ङिद्वत् होने के कारण श्रम् के अकार का लोप हुआ। जकार काकुत्व राकार होने पर नकार को अनुस्वार परसवर्ण से ङकार होने पर रूप सिद्ध हुआ।

अनजानि–लोट् उत्तमपुरुष एकवचन में आट् के पित् होने से श्नम् के अकार का लोप नहीं हुआ। धातु के नकार का 'श्नान्नलोपः' से लोप यथा प्राप्त होता है।

आनक्–लङ प्रथमपुरुष एकवचन में आट्, वद्धि, श्रम, धातु के नकार का लोप, तिप् का हल्ङ्यादि लोप होने पर जकार को कुत्व और चर्त्व से ककार होकर रूप बन गया।

अजेः सिचि 7.2.71

अजेः सिचो नित्यमिट् स्यात्। आजीत्।

व्याख्याः अजेरिति–अज् धतु से पर सिच् को इट् नित्य होता है।

ऊदित् होने के कारण विकल्प से प्राप्त इट् का इस सूत्र से नित्य विधान किया गया हे।

आजीत्–लुङ् प्रथमपुरुष एकवचन में आट्, वद्धि, 'च्लि' उसको सिच्, तिप् के इकार का लोप, उसे ईट्, सिच् को 'अजेः सिचि' से नित्य इट्, सिच का लोप, इट् और ईट् को सवर्ण दीर्घ –इतने कार्य होने पर रूप सिद्ध हुआ।

शेष रूप –आजिष्टाम्, आजिषुः। आजीः, आजिष्टम्, आजिष्ट। आजिषम, आजिष्व, आजिष्म। ऌङ् –आजिष्यत्, आङ्क्ष्यत्।

उपसर्ग के योग में–

अभ्यनक्ति–मालिस करता है।

व्यनक्ति–प्रकट करता है।

अभ्यङ्ग–मालिस करना, व्यङ्ग प्रकट करना– ये शब्द इन्हीं उपसर्गों के योग में अज् धातु से बने हैं। 'व्यङ्गय' शब्द साहित्य शास्त्र में बहुत प्रचलित और महत्वूपर्ण है।

शुद्ध धातु का प्रयोग आँखों पर अजन सुरमा आदि लगाने अर्थ में प्रयुक्त होता है–सौवीरमनक्ति नेत्रयोः। –सुरमा आँखों पर लगाता है।

तचू संकोचने 15

तनक्ति। तङक्ता, तचिता।

व्याख्याः तचू (संकुचित करना)–ऊदित्, वेट्। परस्मैपदी। इसके रूप प्रायः 'अज्' के जैसे बनते हैं।

लुङ्–अतचत्, अताङ्क्षीत्।

ओ-विजी भयचलनयोः 16

विनक्ति। 'विज इड्' इति ङित्म् विविजिथ। विजिता। अविनक्। अविजीत्।

व्याख्याः ओविजी (डरना और हिलना)– ओदित, ईदित्। इसके रूप सार्वधातुक में श्नम् होने से 'तच्' आदि के समान और आर्धधातुक में तुदादिगण के इस धातु के समान बनते हैं।

शिष्ऌ विशेषणे 17

शिनष्टि, शिंष्टः, शिंषन्ति। शिनक्षि। शिशेष। शिशेषिथ। शेष्टा। शेक्ष्यति। हेर्धिः-शिण्ढि। शिनषाणि। अशिनट्। शिंष्यात्ष शिष्यात्। अशिष्ज्ञत्।

व्याख्याः शिष्ऌ (विशेषता बताना)अनिट्। ऌदित् होने से लुङ् में च्लि को अङ् होता है।

शिनष्टि–लट् प्रथमपुरुष एकवचन में श्नम् और तकार को ष्टुत्व टकार होकर रूप सिद्ध हुआ।

शिंष्टः–लट् प्रथमपुरुष द्विवचन में अपित् सार्वधातुक के ङिद्वत् होने से श्नम् के अकार का लोप होने पर नकार को अनुस्वार और तकार को ष्टुत्व टकार होकर रूप बना।

शिनक्षि –लट्, मध्यमपुरुष में श्नम्, षकार को 'षढोः कः सि' से ककार और सिप् के सकार को मूर्धन्य षकार तथा क ष के संयोग से क्ष बनकर रूप सिद्ध हुआ।

लिट्–शिशेष, शिशिषतुः, शिशिषुः। शिशेषिथ, शिशिषथुः, शिशिष। शिशेष, शिशिषिव, शिशिषिम।

लोट्– शिनष्टु, शिंष्टाम्, शिंषन्तु।

शिण्ढि–लोट् मध्यमपुरुष एकवचन में हि के अपित् होने से श्नम् के अकार, का लोप हुआ। 'हि' को 'हुझल्भ्यो हेर्धिः' से 'धि' आदेश, षकार को जश् डकार धकार को ष्टुत्व ढकार, डकार का सवर्ण झर् लोप और नकार को अनुस्वार

पर सवर्ण से णकार होकर रूप बना।

शिनषाणि– लोट् उत्तमपुरुष एकवचन में आट् के पित् होने से श्रम् के अकार का लोप नहीं हुआ। 'आनि' के नकार को णत्व हुआ।

अशिनट्–लङ् प्रथमपुरुष एकवचन में अट्, तिप् का हल्ङ्यादि लोप होने पर धकार को जश् डकार और उसे चर् टकार विकल्प से होकर रूप सिद्ध हुआ।

शेष रूप–अशिंष्टाम्, अशिंषन्। अशिनट्–ड्, अशिंष्टम्, अशिंष्ट। अशिनषम्, अशिंष्व, अशिंष्म।

शिंष्यात्–वि.लि. प्रथमपुरुष एकवचन में यासुट् के ङित् होने से श्नम् के अकार का लोप होने पर नकार को अनुस्वार हुआ।

शिष्यात्– आ. लि. प्रथमपुरुष एकवचन में आर्धधातुक होने से श्नम् नहीं हुआ।

अशिषत्–लुङ् प्रथमपुरुष एकवचन में अट्, तिप्, च्लि, च्लि, को लदित होने से 'पुषादिद्युतादिलदितः परस्मैपदेषु' से अङ् होने से रूप सिद्ध हुआ।

एवं पिष्लृ संचूर्णने 18

व्याख्याः पिष्लृ (पीसना)–अनिट्। लदित। परस्मैपदी। इसके रूप शिष् के समान बनते हैं।

भजो आमर्दने 19

श्रान्नलोपः भनक्ति। बभजिथ, बभङ्क्थ। भङ्क्ता। भङ्ग्धि। अभाङ्क्षीत्।

व्याख्याः भजो (तोड़ना)–अनिट्। ओदित् होने से निष्ठा में भग्नः, भग्न वान् तकार को नकार होता है। इसके नकार को श्नम् से परे लोप हो जाता है।

बभजिथ, बभङ्क्थ– लिट् मध्यमपुरुष एकवचन थल् में द्वित्व और अभ्यासकार्य होने पर तास् में नित्य अनिट् होते हुए अकारवान् होने से भारद्वाज नियम से विकल्प से इट् हुआ। इट्पक्ष में पहला रूप बना। इट् के अभाव में जकार को कुत्व और चर्त्व से ककार, और नकार को अनुस्वार परसवर्ण से ङकार होकर दूसरा रूप बना।

लुट्–भङ्क्ता। लृट–भङ्क्षयति। लोट्–भनक्तु, भङ्क्ताम्, भजन्तु।

भङ्ग्धि–लोट मध्यमपुरुष एकवचन में हि के अपित् होने से ङिद्वत् होने के कारण श्नम् के अकार का लोप हुआ। 'हि' को 'हुझल्भ्यो हेर्धिः' से 'धि' आदेश, जकार को कुत्व गकार और नकार को अनुस्वार परसवर्ण ङकार होकर रूप बना।

शेष रूप–भङ्क्तत, भङ्क्त। भनजानि, भनजाव, भनजाम। लङ्–अभनक् वि० लि०– भज्यात्। आ० लि०–भज्यात्।

अभाङ्क्षीत्–लुङ् प्रथमपुरुष एकवचन में अट, तिप, च्लि, विच, ईट, हलन्तलक्षणा वद्धि, जकार को कुत्व, चर्त्व ककार, नकार को अनुस्वार परसवर्ण से ङकार, सकार को षकार, क ष के संयोग से क्ष होने पर रूप बना।

शेष रूप–अभांङ्क्ताम्, अभाङ्क्षुः। अभाङ्क्षीः, अभाङ्क्तम्, अभाङ्क्त। अभाङ्क्षम्, अभाङ्क्ष्व, अभाङ्क्ष्म। लृङ–अभङ्क्ष्यत्।

उपसर्ग के योग में –विभनक्ति बाँटना है।

भुज पालनाभ्यवहारयोः 2०

भुनक्ति। भोक्ता। भोक्षयति। अभुनक्।

व्याख्याः भुज् (पालन करना) और खाना– अनिट्।

पालन करने अर्थ में परस्मैपदी ओर खाने में आत्मनेपदी है।

भुनक्ति–लट् प्रथमपुरुष एकवचन में श्नम्, जकार को कुत्व और चर्त्व होकर ककार हुआ।

शेष रूप–भूङ्क्तः, भुजन्ति। भुनक्षि, भुङ्क्थः, भुङ्क्थ। भुनज्मि, भुज्वः, भंज्मः। लिट्–बुभोज।

भोक्ता –लुट् प्रथमपुरुष एकवचन में लघूपधगुण, जकारको कुत्व और चर्त्व के द्वारा ककार होकर रूप बना।

भोक्ष्यति– लुट् प्रथमपुरुष एकवचन में लघूपधगुण, जकार को कुत्व और चर्त्व के द्वारा ककार,स्य के सकार को मूर्धन्य षकार और क ष के संयोग से क्ष होकर रूप सिद्ध हुआ।

अभुनक्–लङ् प्रथमपुरुष एकवचन में अट्, श्नम, तिप् का हल् ङ्यादि लोप, जकार को कुत्व गकार और अवसान में चर् ककार विकल्प से होकर रूप बना।

शेष रूप–अभुङ्क्ताम्, अभुजन्। अभुनक्–ग्, अभुङ्क्तम्, अभुङ्क्त अभुजम्, अभुज्व, अभुज्म।

वि० लि०–भुज्यात्। आ० लि०– भुज्यात्। लुङ्–अभोक्षीत्। लृङ् अभोक्ष्यत्।

भुजोनवने 1.3.66

तङानौ स्तः। ओदनं भुङ्क्ते। अनवने किम्-महीं भुनक्ति।

व्याख्याः भुज इति–भुज् धातु से आत्मनेपद के प्रत्यय आते हैं पालना करना अर्थ में भिन्न अर्थ में अर्थात् खाने अर्थ में

ओदनं भुङ्क्ते–यहाँ 'भुज' धातु का अर्थ भोजन करना है पालन करना नहीं। इसलिये आत्मनेपद का प्रयोग हुआ।

आत्मनेपद के शेष रूप– लिट्–वुभुजे। लुट्–भोक्ता । लृट्–भोक्ष्यते। लोट्–भुङ्क्ताम्, भुजाताम्, भुजताम्। भुङ्क्ष्व, भुजाथाम्, भुङ्ग्ध्वम्।अभुङ्क्थाः,अभुजाथाम, अभुङ्ग्ध्वम्। अभुजि, अभुज्वहि, अभुजमहि। वि० लि०–भुजीत। आ० लि०–भुक्षीष्ट। लुङ्– अभुक्त, अभुक्षाताम्, अभुक्षत। अभुक्थाः, अभुक्षाथाम,अभुग्ध्वम्। अभुक्षि, अभुक्ष्वहि, अभुक्ष्महि। लृङ् –अभीक्ष्यत।

अनवने इति–'पालन से भिन्न अर्थ में आत्मनेपद होता है।' ऐसा क्यों कहा? उसका समाधान किया है। महीं भुनक्ति–पथ्वी का पालन करता है। यहाँ पालन अर्थ होने से आत्मनेपद नहीं हुआ।

ाइन्धी दीप्तौ 21

इन्धे, इन्धाते, इन्धते। इन्त्से। इन्ध्वे। इन्धाचक्रे। इन्धिता। इन्धाम्, इन्धाताम्, इनधै। ऐन्ध। ऐन्धाताम्। ऐन्धाः।

व्याख्याः इन्धी (चमकना)–सेट्। ाीदित्। ईदित्। आत्मनेपदी।

इन्धे–लट् प्रथमपुरुष एकवचन में श्नम् धातु के नकार का लोप, अपित् सार्वधातुक होने से त परे रहते श्नम् के अकार का लोप त के तकार को 'झष स्तथोर्धेधः' से धकार, पूर्व धकार का सवर्ण झर् लोप रूप सिद्ध हुआ। लोप के अभाव पक्ष में पूर्व धकार को जश् दकार होकर 'इन्द्धे' रूप बना।

इन्धाचक्रे–इजादि गुरुमान् होने स इन्ध धातु से लिट् में आत् आता हे। तब 'कृ' के अनुप्रयोग से रूप सिद्ध हुआ। इन्धाम्–लोट् प्रथमपुरुष एक वचन में श्नम्, धातु के नकार का लोप, श्नम् के अकार का लोप , तकार को धकार, सवर्ण झर् लोप होकर रूप सिद्ध हुआ।

इनधै–लोट् उत्तमपुरुष एकवचन में श्नम्, धातु के नकार का लोप आट्, वद्धि होकर रूप सिद्ध हुआ।

ऐंन्ध–लङ् प्रथमपुरुष एकवचन में आट्, वद्धि श्नम्, धातु के नकार का लो, श्नम् के अकार का लोप, सवर्ण झर् का लोप होने पर रूप बना।

ऐन्धाः–लङ् मध्यमपुरुष एकवचन में आट्, वद्धि श्नम्, धातु के नकार का लोप, श्नम के अकार का लोप, थकार को धकार, पूर्वधकार का सवर्ण झर का लोप होकर रूप बना।

वि० लि० –इन्धीत। आ० लि० –इन्धिषीष्ट। लुङ्–ऐन्धिष्ट। लृङ्–ऐन्धिष्यत।

विद विचारणे 22

विन्ते। वेत्ता।। इति रुधादयः।।

व्याख्याः विद् (विचार करना)–आत्मनेपदी। अनिट्

विन्ते–लट् प्रथमपुरुष एकवचन में श्नम् के अकार का लोप, दकार का सवर्ण झर् लोप होने पर रूप सिद्ध हुआ।

शेष रूप–विन्दाते, विन्दते, विन्दते। विन्त्से, विन्दाथे, विन्द्ध्वे। विन्दे, विन्द्वहे, विन्द्महे, लिट्–विविदे।

वेत्ता–लुट् प्रथमपुरुष एकवचन में लधूपध गुण और दकार को चर् तकार होकर रूप बना।

ऌट्–वेत्स्यते। लोट्–विन्ताम्। लङ् अविन्त। वि० लि०–विन्दीत् आ० लि०– वित्सीष्ट। लुङ्–अवित्त। ऌङ् अवेत्स्यत।

(रूधादिगण समाप्त)